पाठ 2. चंपा का त्याग

पाठ का परिचय

भारत के गौरव की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप अपने परिवारसहित अरावली पर्वत के जंगलों में दुख के दिन काट रहे थे लेकिन उन्होंने अकबर के सामने अपनी हार स्वीकार नहीं की। प्रभात के पश्चात का समय था। महाराणा प्रताप के बेटे सुंदर ने अपनी बहन चंपा से कहा कि उसे ज़ोरों की भूख लगी है। चंपा ने उससे कहा कि वह झोंपड़े में चले, वहाँ वह उसे भरपेट रोटियाँ खिलाएगी क्योंकि उसने दो-तीन दिनों से अपने हिस्से की रोटियाँ बचा रखी हैं। सुंदर यह जानकर रोने लगा कि उसकी बहन ने दो-तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है। रोते-रोते वह सो गया। झोंपड़े के बाहर शिलाखंड पर बैठे महाराणा प्रताप इस चिंता में मग्न थे कि मेवाड़ को किस तरह स्वतंत्र कराया जाए। तभी एक ब्राह्मण वेशधारी व्यक्ति ने आकर भिक्षा में भोजन माँगा। महारानी गुणवती और महाराणा प्रताप का मस्तक झुक गया क्योंकि झोंपड़े में खाने को कुछ नहीं था। तभी चंपा बाहर आई और अपने द्‌वारा दो-तीन दिन की बचाई रोटियों की बात की। ब्राह्मण, महाराणा प्रताप व महारानी गुणवती – तीनों यह सुनकर स्तब्ध रह गए। चंपा झोंपड़े में गई और पानी का लोटा और रोटी लेकर बाहर आई। तभी एक बिलाव आया और रोटी छीनकर भाग गया। चंपा उसके पीछे भागी और ठोकर खाकर शिलाखंड पर गिर पड़ी। उसका मस्तक फट गया। महाराणा प्रताप ने उसे उठाकर गोद में लिटा लिया। अपनी बेटी का दुख उनसे देखा न गया। वे बोल उठे कि मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दूँगा और अकबर से संधि कर लूँगा लेकिन मरती हुई चंपा ने अपने पिता से वचन माँगा कि वे अकबर से संधि नहीं करेंगे। ब्राह्मण वेशधारी व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं अकबर थे। उन्होंने महाराणा प्रताप के सामने मित्रता का हाथ बढ़ाया लेकिन इतिहास गवाह है कि महाराणा प्रताप ने अकबर की मित्रता भी स्वीकार नहीं की।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

स्वतंत्रता का सुख सबसे बड़ा सुख होता है और परतंत्रता का दुख सबसे बड़ा दुख। स्वतंत्रता में यदि कठोर भूमि पर भी सोना पड़े तो नींद आ जाती है लेकिन परतंत्रता में सारी सुख-सुविधाएँ भी आनंद का एक पल नहीं दे सकतीं।

पाठ का वाचन

कहानी को पूरे हाव-भाव सहित पढ़ें। बीच-बीच में बच्चों से प्रश्न करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताकर कहानी का भाव स्पष्ट करें। कहानी का वाचन पूरा होने पर बच्चों को कहानी के संवाद लिखने को कहें। कक्षा में इस कहानी का मंचन करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर कक्षा में चर्चा करें –

- स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?
- चंपा के द्‌वारा किया गया त्याग क्या सही था?
- यदि तुम चंपा की जगह होते तो क्या करते?
- तुम्हें स्वतंत्रता में मिलने वाला दुख स्वीकार है या परतंत्रता में प्राप्त सुख?
- अपने देश की आज़ादी के लिए तुम किस-किस तरह की कुरबानी दे सकते हो?